International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 4; July 2017; Page No. 55-56

कामतानाथ की कहानियों में मानवाधिकार की चेंतना

[1] अनुश्री त्रिपाठी, [2] डॉ0 प्रमिला बुधवार

[1] शोधकत्री महिला महाविद्यालय, बहराइच, उत्तर प्रदेश, भारत।

[2] प्राचार्या, विभागाध्यक्ष महिला महाविद्यालय, बहराइच, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश

कामतानाथ सत्तर के दशक में उभरने वाले उन महत्वपूर्ण कथाकारों में आते हैं जो प्रेमचंद की सामाजिक और यथार्थवादी दृष्टि को अपनाते हैं। इस संदर्भ में राजकुमार की यह टिप्पणी यहाँ उल्लेखनीय है– ''वे मूलतः प्रेमचंद की परम्परा के कथाकार हैं। प्रेमचंद की परम्परा का कथाकार कहने से आशय प्रेमचंद की यथावत् पुनर्प्रस्तुति से नहीं हैं। उन्होंने प्रेमचंद की परम्परा का अपने ढंग से विस्तार और नवोन्मेश किया है। उनकी कहानियां सामाजिक सरोकार की कहानियां हैं। सामाजिक सरोकार की चिंता उनकी कहानियों के कथ्य को ही नहीं, भाषा और शिल्प को भी काफी दूर तक निर्धारित एवं नियंत्रित करती है।..... यथार्थवादी शिल्प की महत्ता और सार्थकता को वे स्वयं स्वीकार करतें हैं।

प्रेमचंद की परम्परा से अर्थ समाज की जमीनी सच्चाई को न सिर्फ कागज पर उतारना बल्कि स्वयं भी सामाजिक संघर्ष में हस्तक्षेप करना हैं। कामतानाथ निम्नमध्यवर्गीय पृष्ठभूमि से जुड़े एक ऐसे कथाकार हैं जो स्वयं जीवन के हर स्तर पर संघर्ष करते हैं। कामतानाथ जहाँ वामपंथी विचारधारा को आधार बनाकर ट्रेड यूनियन में सक्रिय भागीदारी करते हैं वहीं साहित्य जगत में समांतर कथा आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कामतानाथ स्वयं कहतें हैं–'' साठ के दशक के प्रारंभ से लेकर आज तक मैं कहानी के इस सफर का चश्मदीद गवाह हूँ। 'समांतर' और प्रगतिशील लेखक' आंदोलनों में मेरी सक्रिय भागीदारी भी रही।

मूल शब्द कामतानाथ, भारतीय समाज, प्रेमचंद, कहानी।

प्रस्तावना

साहित्य ने सदैव ही मानव समाज के हर संघर्ष में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारत में स्वतंत्रता पूर्व से ही साहित्य ने भारतीय समाज के हर वर्ग को उनके अधिकारों के प्रति उन्हें जागरूक और प्रेरित किया है। इस संदर्भ में सबसे महत्वपूर्ण नाम प्रेमचंद का आता है। प्रेमचंद का साहित्य सामाजिक सरोकारों को आधार बनाता है। प्रेमचंद ने साहित्य को कोरी कल्पना की कारा से मुक्त कर यथार्थ की ठोस और सच्ची पृष्ठभूमि में स्थापित किया है। प्रेमचंद साहित्य को जनता की आवाज बनाकर तत्कालीन समाज में क्रांतिकारी भूमिका निभाते हैं। यह कहना यहाँ आवश्यक है कि प्रेमचंद ने कथा साहित्य को सर्वाधिक सशक्त रूप से प्रस्तुत किया है। कथा विधा पाठकों के मध्य अधिक प्रचलित रही है। प्रेमचंद संघर्ष में कथा साहित्य को साधन की तरह प्रयोग करते हैं और समृद्ध करते हैं। प्रेमचंद की परम्परा को आगे बढ़ाने का महत् कार्य कामतानाथ ने किया। कामतानाथ सत्तर के दशक में उभरने वाले उन महत्वपूर्ण कथाकारों में आते हैं जो प्रेमचंद की सामाजिक और यथार्थवादी दृष्टि को अपनाते हैं। इस संदर्भ में राजकुमार की यह टिप्पणी यहाँ उल्लेखनीय है– ''वे मूलतः प्रेमचंद की परम्परा के कथाकार हैं। प्रेमचंद की परम्परा का कथाकार कहने से आशय प्रेमचंद की यथावत् पुनर्प्रस्तुति से नहीं हैं। उन्होंने प्रेमचंद की परम्परा का अपने ढंग से विस्तार और नवोन्मेश किया है। उनकी कहानियां सामाजिक सरोकार की कहानियां हैं। सामाजिक सरोकार की चिंता उनकी कहानियों के कथ्य को ही नहीं, भाषा और शिल्प को भी काफी दूर तक निर्धारित एवं नियंत्रित करती है।..... यथार्थवादी शिल्प की महत्ता और सार्थकता को वे स्वयं स्वीकार करतें हैं।''[1]

प्रेमचंद की परम्परा से अर्थ समाज की जमीनी सच्चाई को न सिर्फ कागज पर उतारना बल्कि स्वयं भी सामाजिक संघर्ष में हस्तक्षेप करना हैं। कामतानाथ निम्नमध्यवर्गीय पृष्ठभूमि से जुड़े एक ऐसे कथाकार हैं जो स्वयं जीवन के हर स्तर पर संघर्ष करते हैं। कामतानाथ जहाँ वामपंथी विचारधारा को आधार बनाकर ट्रेड यूनियन में सक्रिय भागीदारी करते हैं वहीं साहित्य जगत में समांतर कथा आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कामतानाथ स्वयं कहतें हैं–'' साठ के दशक के प्रारंभ से लेकर आज तक मैं कहानी के इस सफर का चश्मदीद गवाह हूँ। 'समांतर' और प्रगतिशील लेखक' आंदोलनों में मेरी सक्रिय भागीदारी भी रही।''[2]

ट्रेड यूनियन में अपने अनुभवों को साझा करते हुए कामतानाथ लिखते हैं–''1961 में मेरी पहली कहानी प्रकाशित हुई तब मैं लखनऊ में था। 1966 में मैं कानपुर आ गया। ट्रेड यूनियन में सक्रिय मैं लखनऊ रहते ही हो गया था। इसी सिलसिलें में लखनऊ में जेल भी काटी। कानपुर में ट्रेड यूनियन में मेरी सक्रियता लखनऊ की तुलना में कई गुना बढ़ गयी।''[3]

कामतानाथ अपने अनुभवों को अपनी कहानी 'आत्मरचना' में व्यक्त करते हैं–''आज भी यदि मुझे दुबारा जेल जाना पड़े तो मुझे गम नहीं होगा। हां, मन में कहीं यह इच्छा जरूर है कि यह व्हाइट कालर ट्रेड यूनियन अपनी सुविधापरस्ती छोड़कर देश की वास्तविक समस्याओं समाजवाद की स्थापना और आर्थिक नवनिर्माण के लिए समर्पित हो सके तो कितना अच्छा हो।''[4] यहाँ कथाकार ट्रेड यूनियन के भ्रष्ट चरित्र को उद्घाटित करता है तो निराश न होकर उसमें संभावनाओं को भी तलाशता है।

कामतानाथ एक प्रतिबद्ध रचनाकार हैं उनके साहित्य का बीज उनके भोगे हुए यथार्थ की पृष्ठभूमि में अंकुरित होता है। कामतानाथ की तरह कामतानाथ के कहानी का पात्र जीवन की त्रासदी को झेलता एक साधारण मानव है। आज के परिवेश को परिभाषित करते हुए सं0 श्यामकिशोर सेठ और राजेन्द्र कुमार मेहरोत्रा लिखते हैं–'' भूख से दम तोड़ती मेहनतकश जनता, असुरक्षा से घिरे हुए दिल–दिमाग, उत्पीड़न और यातना से आतंकित आदमी, जनतंत्र की हत्या के लिए बढ़ते हुए फासिज्म के खूंखार शिकंजे, मानवीय मूल्यों के हनन और अमानवीयकरण की तेज होती हुई प्रक्रिया से बना यह

है हमारा आज का परिवेश'' कामतानाथ के साहित्य में उल्लिखित पात्र समकालीन परिवेश की कसौटी पर कसे हुए पात्र हैं।

कामतानाथ की कहानियों में आर्थिक विषमता जीवन का एक ऐसा पहलू है जो व्यक्ति के अधिकारों और आकांक्षाओं को सीमाओ में बांध देता है। इच्छाओं को मार कर व्यक्ति को कुंठाग्रस्त कर देता है। इस संदर्भ में 'छुट्टियां' संग्रह में संकलित कहानी 'समझौता' का यह अंश दर्शनीय है–''परन्तु वह इस स्थिति के लिए मानसिक तौर पर तैयार नहीं था। वह अभी विवाह नहीं करना चाहता था। उसकी डेढ़ सौ रूपये की मासिक आय और पिता की पेंशन के सत्तर रूपये मिलकर मुश्किल से घर का खर्च चल पाता था।''[6] वहीं कामतानाथ का कहानी संग्रह 'तीसरी सांस' की कहानी 'दीवारें' बेरोजगारी, मुस्लिम समाज में स्त्री शिक्षा एवं जातिगत भेदभाव की समस्या को एक साथ उठाती है। धनाभाव के चलते तनवीर का इलाज न हो पाना; रफीक का असफल प्रेम इत्यादि परिवार को निराशा के गर्त में ढकंल देता है–''जी हां तनवीर मेरा नाम है। तनवीर का अर्थ होता है उजाला प्रकाश परन्तु मेरी ज़िंदगी में तनवीर की एक किरन भी नहीं हैं।''[7]

कामतानाथ की कहानियाँ पाठक के समक्ष आमजन के जीवन के अनबुझे मूलभूत प्रश्नों को उद्घाटित कर मानो जीवन की परतों में दबे घावों को उभार देती है– ''लोग इस बेवकूफ ज्योतिषी के पास आकर क्यों फंसते हैं? पुलिस के डण्डे खाकर भी लोग सिनेमा के टिकटों की चोर बाजारी क्यों करतें हैं? सुनहरे बालों वाली लड़की उस लड़के से बात क्यों नहीं करती? रोजी को और कितनी रातों अंधेरे का सहारा लेना पड़ेगा? दिन के उजाले में उसका हाथ पकड़ने वाला प्रेमी कब आएगा? मिस छोबी विवाह क्यों नहीं कर लेती?''[8]

कामतानाथ की कहानियों में समाज के उस हर वर्ग को आवाज मिली है जो अपने अधिकारों से कहानियों से समझौता करने को बाध्य है। भारतीय समाज में मुसलमानों की स्थिति सदैव ही संघर्षपूर्ण रही है। समाज का महत्वपूर्ण अंग होने के बाद भी यह वर्ग अस्तित्व की लड़ाई को बाध्य है। कामतानाथ की कहानी 'युद्ध 'इस संदर्भ में उल्लेखनीय है। युद्ध की स्थिति में व्यक्ति जहाँ औजारों की लड़ाई लड़ता है वहीं देश की आंतरिक युद्धरत मानसिकता से हार जाता है। कामतानाथ ने अपनी कहानियों में उन जमीनी सच्चाइयों को उजागर किया है जो व्यक्ति क अधिकारों से उसे वंचित करता है। यह समस्याएं समाज में कोढ़ के रूप में आज विद्यमान हैं। एक स्वस्थ एवं विकसित समाज की स्थापना के लिए इन समस्याओं से उबरना पहली शर्त है।

कामतानाथ ने अपनी कहानियों में अर्थाभाव, बेरोजगारी, अशिक्षा, स्त्री शिक्षा, रूढ़िवादिता, जातिवादिता, धर्मवादिता, समाज में बच्चों और वृद्ध जन संबंधी समस्याओं, पूँजीवाद, आतंकवाद जैसी मूलभूत समस्याओं को विषय बनाया है। ये समस्याएं मानवाधिकार की लड़ाई के प्रमुख बिंदु हैं। कामतानाथ की कहानियों में पात्र इन समस्याओं से जूझता एक बेबस पात्र है। इस पात्रों की खिन्नता इन शब्दों में व्यक्त होती है–''सर...। मेरा मुँह फैला का फैला रह गया। पता नहीं, मैं क्या कहने जा रहा था। शायद कुछ नहीं। या शायद मैं कह नहीं सकता। इतना तो निश्चित था।''[9] कहीं–कहीं पात्र इन समस्याओं को सुलझाने का प्रयास भी करता है। कहानी संग्रह 'शिकस्त' की कहानी 'काम का पहिया' इस संघर्ष को सफलता से दर्शाती है। वहीं दूसरी ओर 'कुछ होने तक' का पात्र व्यवस्था के प्रति असंतोष की भावना से ग्रस्त हो अपना मानसिक संतुलन खो देता है और आतंकवाद का मार्ग अपनाता है– ''कुल मिलाकर वह एक अजीब किस्म की बेचैनी का अहसास कराता था। यह बेचैनी शायद असंतोषजनक थी। क्योंकि वह किसी भी बात से संतुष्ट नजर नहीं आता था विशेषकर देश की राजनीतिक और आर्थिक दशा से। इसके लिए वह सभी को गालियां देता। पूँजीपतियों, राजनीतिज्ञों और नेताओं को। और कभी–कभी देश की जनता को भी।''[10] पात्र स्थितियों के प्रति इतना निराश हो जाता है कि आने वाली पीढ़ी के लिए निराशाजनक भविष्यवाणी करता है–'' वैसे मेरे बच्चों की चिंता तुम मत करो। उन्हें चोर–गिरटकट्ट ही बनने दो। और यह भी बता दूँ मैं तुमको इस देश में चोर–गिरटकट्टो का ही भविष्य है। साधु महात्माओं का नहीं।''

यहाँ हमें व्यवस्था की मार झेलते टूटे और बेबस व्यक्ति की कुंठा साफ परिलक्षित होती है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि कामतानाथ का कथा साहित्य मात्र पाठकों का मनोंरजन नहीं करता बल्कि पाठक को उसकी स्थिति की सच्चाई से परिचित कराता है। उसके सामने जीवन के उन गम्भीर प्रश्नों को उठाता है जो उसके ही नहीं आने वाली पीढ़ी का भी भविष्य निर्धारित करते हैं। कामतानाथ के साहित्य का उद्देश्य पाठक को निराशा के गहन अंधकार में नहीं ढकेलता अपितु उसे साहस देकर भविष्य के प्रति संभावनाओं से भी भर देता है। अतः कामतानाथ का कथा साहित्य टूटे, बिखरे, निराश मानव की अंतहीन गाथा ही नहीं है बल्कि उज्जवल भविष्य की कामना को सुनिश्चित करने की एक आशावान सोच भी है। स्पष्ट है कामतानाथ अपने कथा साहित्य के माध्यम से अपनी प्रतिबद्धता सुनिश्चित करते हैं और मानवाधिकार के संघर्ष के यज्ञ में एक ऊर्जावान आहुति देते हैं।

संदर्भ

1. 'कामतानाथ : संकलित कहानियाँ; राजकुमार : पृ0–10।
2. 'दस प्रतिनिधि कहानियां' : कामतानाथ' कामतानाथ' : पृ0–7 ।
3. 'सम्पूर्ण कहानियां कामतानाथ भाग–1' : कामतानाथ।
4. 'सब ठीक हो जाएगा' : कामतानाथ : पृ0–11।
5. 'समकालीन कहानी : रचना और दृष्टि' : सं0 श्यामकिशोर सेठ और राजेंद्र कुमार : पृ0–104।
6. 'छुट्टियां' : कामतानाथ : पृ0–41।
7. 'तीसरी सांस : कामतानाथ : पृ0–14।
8. 'तीसरी सांस' : कामतानाथ : पृ0–39।
9. 'रिश्ते–नाते' : कामतानाथ : पृ0–95।
10. 'तीसरी सांस' : कामतानाथ : पृ0–118।
11. 'शिकस्त' : कामतानाथ : पृ0–188।